पृथ्वी

माँ, मातृभूति का सम्बोधन दिया गया है हमारी परम्परा में पृथ्वी के लिए। यह कोई साधारण परिकल्पना मात्र नहीं है अर्थात् यथार्थ है। हमें इससे क्या नहीं मिलता है। यह हमारे जीवन की आधारशिला है। पर हमें इसका पूजन व दोहन के अलावा कुछ और नहीं आता है। हमारे करोड़ों वर्षों के दोहन के पश्चात् भी इसे हमें देना आता है और हम लेते ही नहीं वरन् इतना अधिक ले लेते हैं कि हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों की भी चिन्ता नहीं रहती कि उनके लिए कुछ नहीं बचेगा।

कुदरत ने हमें दी थी एक ही धरती
हमने ही कहीं भारत, कहीं इराक, कहीं ईरान बनाया।

मातृभूमि पर मर मिटने वाले बहुत हुए हैं और होते रहेंगे पर इसका निरादर अनजाने में करने वाले हम सभी हैं। पृथ्वी का 7/8 हिस्सा पानी से भरा पड़ा है पर पानी ओर पृथ्वी का अटूट रिश्ता है। जिस जीवन को हम जानते हैं वह बना हुआ है। इस लेख का उद्देश्य पृथ्वी के गुणों व उपयोग के बारे में नहीं है वरन् उसकी उपयोगिताको देखते हुए उसके बारे में विचार करना और अपने जीवन में इस धारणा को लाना है कि हम इसका उपयोग करें, दुरुपयोग न करें। हमं जिस स्थिति में यह मिली है, उससे अच्छी स्थिति में छोड़कर जायें। हम इस पर भार तो हें हीं, पर हम इसे रौंदे नहीं।

धरती गर्भ सम्भूतम विद्युत कंचन दर्शिताम्।
कुमार शक्ति हस्तम् च मंगलम प्रति वेधिताम्।।

पृथ्वी के कई नाम हैं जैसे धारणी भी उनमें से एक बहुत महत्वपूर्ण है। धरती के गर्भ में से हमें सब कुछ मिलता है। धरती के ऊँचे-नीचे होने के कारण विद्युत भी बनाई जाती है, पानी के द्वारा। इसमें कंचन भी होता है। यानि बहुत सी क्यों, सभी धातुयें इसी से मिलती हैं। यदि इसमें युवा शक्ति भी लगी रहे तो वह सबके लिए उपयोगी होगी। जल भी पृथ्वी में बहुतायत में है पर हम इसका भी ठीक उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। हमें इस विषय पर भी खोज करनी होगी।

बहुत से लोग सोचते हैं कि जब आबादी इतनी बढ़ जायेगी, जितनी अब है, पृथ्वी हमारे आहार की पूर्ति में असमर्थ होगी। लोगों की यह धारणा कि हम शाकाहारी ज्यादा ईंधन का इस्तेमाल करते हैं बल्कि इसका उल्टा ही ठीक है कि शाकाहारी पानी, स्थल व ऊर्जा का कम इस्तेमाल करते हें और मनुष्य की आन्तरिक संरचना भी शाकाहार के लिए बनाई हुई है। पर यह इस लेख का विषय नहीं है कि इस बात पर ज्यादा लिखा जाये। दोनों ही पद्धतियाँ हर समय साथ-साथ चलती रही हैं और चलती रहेंगी। मतभेद था, है और रहेगा। यह मतभेद की परिपाटी अच्छी है, जबरदस्ती से कुछ भी हासिल नहीं होगा वरना मनुष्य जाति का नाश ही होगा।

हम बात कर रहे थे किस ढंग से हम पृथ्वी के लिए उपयोगी हो सकते हैं और पृथ्वी हमारे लिए। पृथ्वी को एक पेड़ को 100 फीट का बनाने में 25 से 100 वर्ष लगते हैं और हमें काटकर इस्तेमाल करने में कुछ मिनट लगते हैं, तो हममें से प्रत्येक का यह कर्तव्य हो जाता है कि हम अपने जीवनकाल में कुछ पेड़ तो अवश्य लगायें ताकि आने वाली पीढ़ी भी आराम से जी सके।

पृथ्वी में पाये जाने वाली बहुत सी धातुएं कैसे बनती हैं, उसका एक उदाहरण है लोहे के अवयव बड़े-बड़े पहाड़ों में पाये जाते हैं जो एक बहुत ही छोटे जीवाणु द्वारा बनता है और कई करोड़ साल लगते हैं पर यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी पृथ्वी में इसकी मात्रा बहुत अधिक है। पर दूसरी तरफ हम गैस व पेट्रोल को देखें तो मात्रा बहुत ही कम है और जिस गति से हम इस्तेमाल कर रहे हैं वह 100 साल से भी कम में समाप्त हो सकता है। यह विचारणीय विषय है तो हमें अभी से दूसरे सूत्रों से ऊर्जा पूर्ति करनी होगी। जिस गति से हम ट्रांसपोर्ट पर ऊर्जा व्यय कर रहे हैं क्या वह न्यायसंगत है प्रोगेस के नाम पर। विकासशील देशों में यह प्रतिशत 15-20 तक है जो खाने के प्रतिशत से भी अधिक है। विकसित देश भी इस होड़ में आने की भरपूर कोशिश में है, जो न्यायसंगत नहीं है। इस तथ्य पर ध्यान देना जरूरी है क्योंकि हर वस्तु, जो हम इस्तेमाल करते हैं उसका एक बहुत बड़े मूल्य का हिस्सा उसके बनने के स्थल से, उपभोग स्थल तक लाने के तंत्र में ही लग जाता है। अगर हम अपने पड़ोसी की बनाई हुई वस्तुयें इस्तेमाल करेंगे तो इसमें हम सबका ही लाभ है। मो0क0 गांधी जी ने कहा था उस तथ्य की उपयोगिता स्वयं ही अब सामने आ रही है। अगर पृथ्वी को आगे बढ़ना है या बचना है तो उसकी शान्ति ही इसे बचा सकती है वरना मनुष्य ने तो इसे समाप्त करने के बहुत उपाय कर रखे हैं। पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि डायनासोर जैसे बड़े प्राणी भी कभी इस पृथ्वी पर विचरते थे तो मनुष्य की क्या बिसात है। जो अभी कुछ लाख साल से ही इस पृथ्वी पर आया है। पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों में एकमात्र मनुष्य ही ऐसा है जो पालने वाली पृथ्वी के प्रति ही कृतघ्न नहीं है।

कुछ तथ्य पृथ्वी के बारे में :—

- ❖ इसकी परिधि 40,000 कि0मी0, व्यास 12800 कि0मी0 है। सन्तरे के आकार की है।
- ❖ इसकी 7/8 भूमि में समुन्द्र है।
- ❖ इसकी ऊपर की 80 कि0मी0 मोटाई में ठोस है बाकी तरल है। इसलिए पृथ्वी गोल होने पर भी हम एक सिरे से खोदना शुरू करें तो दूसरी ओर जा ही नहीं सकते हैं क्योंकि बहुत ज्यादा गर्म है।
- ❖ इसकी आयु करीब 4.5 अरब साल है। इसे ठण्डा होने में ही 3.5 अरब साल लगे हैं। यह सूर्य से निकली है इसलिए सूर्य का एक प्लैनेट है, सूर्यमण्डल का हिस्सा है।
- ❖ मनुष्य का विकास पिछले कई लाख साल से ही हुआ है।
- ❖ उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर यह गोल नहीं है बल्कि समतल है।
- ❖ चुम्बकीय उत्तर व दक्षिण की स्थिति बदलती रहती है।
- ❖ इसके वायुमण्डल की ऊंचाई 260 कि0मी0 है। पर 100 कि0मी0 ज्यादा घना है बाकी बहुत कम घनत्व की है, जिसमें जीव जिन्दा नहीं रह सकता है।

—रश्मि उमेश रोहतगी
24161 नीलन ड्राईव नौवी(मि०) सं०रा०अ० 48374-3754
248-471-5786 e-mail : rurohatgi@yahoo.com
website : www.rurohatgi.com